द्वयाधिकार का अर्थ (Meaning of duopoly)

द्वयाधिकार अल्पाधिकार सिद्धान्त का वह विशेष पक्ष है जिसमें केवल दो विक्रेता होते हैं। दोनों विक्रेता पूर्ण रूप से स्वतंत्र होते हैं और दोनों में किसी प्रकार का कोई समझौता नहीं होता। यद्यपि उनके बीच कोई समझौता नहीं होता, फिर भी, एक की कीमत और उत्पादन में परिवर्तन से दूसरे पर प्रभाव पड़ेगा और हो सकता है कि उसमें प्रतिक्रियाओं (reactions) की एक श्रृंखला बन जाय। पर, हो सकता है कि एक विक्रेता यह मान ले कि उसके कार्यों से प्रतिद्वन्द्वी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और उस स्थिति में वह कीमत पर अपने प्रत्यक्ष प्रभाव को ही लेता है। दूसरी ओर, यदि प्रत्येक विक्रेता अपनी नीति के दूसरे विक्रेता की नीति पर और उसकी नीति के अपनी नीति पर प्रभाव को ध्यान में रखता है, तो कीमत पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रभावों का विचार करता है। फिर, यह भी हो सकता है कि विक्रय के लिए प्रस्तुत की गई मात्रा या उसकी कीमत के कारण एक प्रतिद्वन्द्वी विक्रेता की नीति में कोई परिवर्तन न हो। इस प्रकार परस्पर-निर्भरता को छोड़कर या उसे स्वीकार करके द्वयाधिकार पर विचार किया जा सकता है। कूर्नो-एजवर्थ (Cournot - Edgeworth) हल का संबंध पहले से है जिसमें परस्पर-निर्भरता की उपेक्षा की गई है जबकि चेम्बरलेन का हल दूसरे से संबंध रखता है जिसमें परस्पर-निर्भरता को मान्यता दी गई है।

हम यहां द्वयाधिकार मॉडलों की व्याख्या कर रहे हैं। ये सभी गैर-कपटसंधिपूर्ण (non-collusive) मॉडल हैं जहाँ फर्में बिना किसी अनकहे या औपचारिक (tacit or formal) समझौते के स्वतंत्र रूप से कार्य करती हैं।

Scanned by CamScanner

कूर्नो मॉडल (The COURNOT MODEL)

सन् 1838 में, पहले-पहल फ्रांसीसी अर्थशास्त्री ए.ए. कूर्नो ने द्वयाधिकार समस्या का निश्चित (determinate) हल किया था। उसमें दो फर्मों A और B द्वारा साथ-साथ स्थित दो खनिज जल के झरनों से पानी निकालने का उदाहरण लिया।

मान्यताएँ (Assumptions) - कूर्नो मॉडल इन मान्यताओं पर आधारित है :

(1) दो स्वतंत्र विक्रेता होते हैं।

(2) वे एक समरूप (homogeneous) वस्तु का उत्पादन और विक्रय करते हैं, जो खनिज जल है।

(3) कुल उत्पादन का पूर्ण विक्रय आवश्यक है क्योंकि वस्तु विनाशशील और संग्रह न की जाने वाली है।

(4) क्रेताओं की संख्या अधिक होती है।

(5) प्रत्येक विक्रेता वस्तु के मार्किट मांग वक्र का ज्ञान रखता है।

(6) उत्पादन की लागत शून्य मान ली जाती है।

(7) दोनों फर्मों की समान लागतें और समान मांगे हैं।

(8) प्रत्येक विक्रेता इस बात का निर्णय करता है कि वह प्रत्येक अवधि में, कितनी मात्रा का उत्पादन और विक्रय करना चाहिए।

(9) परंतु प्रत्येक अपने प्रतिद्वन्द्वी के उत्पादन से संबंध रखने वाली योजना के बारे में कुछ नहीं जानता है।

(10) साथ ही, प्रत्येक विक्रेता अपने प्रतिद्वन्द्वी की पूर्ति (उत्पादन) को स्थिर मान लेता है।

(11) उनमें से कोई भी अपनी वस्तु की कीमत नियत नहीं करता, परंतु प्रत्येक मार्किट-मांग कीमत स्वीकार कर लेता है, जिस पर वस्तु बेची जा सकती है।

(12) नई फर्मों का प्रवेश बन्द है।

(13) प्रत्येक विक्रेता का लक्ष्य अधिकतम शुद्ध अथवा आगम लाभ प्राप्त करना होता है।

Scanned by CamScanner

ये मान्यताएँ दी होने पर, मान लीजिए कि फर्म A और B दो खनिज जल झरनों में से पानी निकल रही हैं। उनका मार्किट मांग वक्र DD_1 है और सीमांत आगम वक्र MR_1 है जैसा कि चित्र 1 में दर्शाया गया है। A और B दोनों की सीमांत लागतें शून्य हैं जिससे वह समानांतर उक्ष के साथ मेल खाता है। मान लीजिए कि फर्म A अकेली उत्पादक है। ऐसी स्थिति में जब इसका MR_1 वक्र बिंदु A पर MC वक्र (समानांतर अक्ष) के बराबर होता है तो $OA (= 1/2\ OD_1)$ मात्रा उत्पादित करती है और बेचती है। वह $AS (= OP)$ एकाधिकार कीमत लेती है और OASP एकाधिकार लाभ प्राप्त करती है। अब फर्म B मार्किट में प्रवेश करती है और यह आशा रखती है कि A अपने उत्पादन स्तर OA को नहीं बदलेगी। इसलिए वह मांग वक्र के SD_1 भाग को अपना मांग वक्र मानती है। इसका सीमांत आगम वक्र MR_2 है जो इसके MC वक्र (समानांतर अक्ष) को B बिन्दु पर काटता है। अतः वह $BG (= OP_1)$ कीमत पर AB मात्रा $(= 1/2\ OD_1 = BD_1)$ बेचती है। और BGTA लाभ कमाने की आशा रखती है।

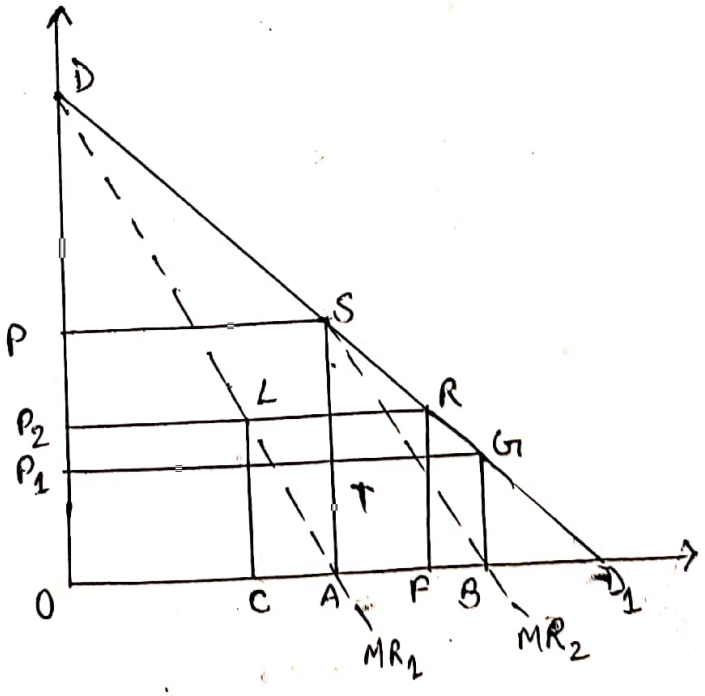

Scanned by CamScanner